[This question paper contains 4 printed pages]

Roll No.	

ASME-24BC-HLIT-II

हिन्दी साहित्य (पेपर-II)

HINDI LITERATURE (PAPER-I)

निर्धारित समय : 3 घंटे | अधिकतम अंक : 100

प्रश्न पत्र संबंधी विशेष अनुदेश

उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को कृपया सावधानीपूर्वक पढ़ें ।

1. इस प्रश्नपत्र में कुल आठ प्रश्न हैं।
2. प्रश्न संख्या—1 का उत्तर अनिवार्य है। अन्य सात प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
3. प्रत्येक प्रश्न के समान अंक हैं। प्रश्न के लिए निर्धारित अंकों का विभाजन प्रत्येक प्रश्न/प्रश्न के भाग के सामने इंगित किया गया है। उत्तर स्पष्ट लिखावट में लिखिए। प्रश्न का उत्तर पूछे गए क्रम के अनुसार ही दीजिए।
4. प्रश्न-संख्या—1 के उत्तर के लिए शब्द-संख्या निर्धारित है, इसका अनुपालन किया जाना चाहिए।
5. प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं है, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।
6. उत्तरपुस्तिका के पुनर्मूल्यांकन / पुन: जाँच की अनुमति नहीं है।

1. प्रत्येक अवतरण की व्याख्या लगभग 200 शब्दों में कीजिए : 4x5 = 20

(क) बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम।
जिव तरसै तुझ मिलन कूँ, मनि नाहीं विश्राम ॥
बिरहिन ऊठै भी पड़े, दरसन कारनि राम।
मूवाँ पीछै देहुगे, सो दरसन किहिं काम ॥

(ख) धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका !
जाना तो अर्थागमोपाय,
पर रहा सदा संकुचित-काय
लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ - समर।

(ग) संध्या हो गई थी। द्वार पर नीम का वृक्ष सिर झुकाये निःस्तब्ध खड़ा था, मानो संसार की गति पर क्षुब्ध हो रहा हो। अस्ताचल की ओर प्रकाश और जीवन का देवता फूलमती के मातृत्व ही की भाँति अपनी चिता में जल रहा था।

(घ) मूर्ति का निर्माण हो सकता है, मृत्तिका का नहीं। उस मिट्टी से अच्छी प्रतिमा भी स्थापित की जा सकती है, बुरी भी, पर जहाँ मिट्टी ही न हो, वहाँ कितने ही प्रचार से, कितनी भी शिक्षा से, कितने भी जाज्वल्यमान बलिदान से मूर्त्ति नहीं बन सकती।

2. (क) कबीर की विरह-संबंधी साखियों के काव्य-सौंदर्य का विवेचन कीजिए। 10

(ख) 'चंद्रगुप्त' नाटक पर पारसी थियेटर के प्रभाव को रेखांकित कीजिए। 10

3. (क) "भ्रमरगीत सार' में गोपियों का स्थानीयता के प्रति आग्रह मिलता है जो आज बहुत प्रासंगिक है"— पठित पदों के आधार पर सिद्ध कीजिए। 10

(ख) "धूमिल की अक्रोशपूर्ण मन:स्थिति का संबंध स्वातंत्र्योत्तर भारत की विसंगतियों से है"— इस कथन के संदर्भ में 'पटकथा' की समीक्षा कीजिए। 10

4. (क) "राम की शक्ति-पूजा' और 'सरोज-स्मृति' की भावभूमि में अतिशय समानता है"—पक्ष या विपक्ष में तर्क प्रस्तुत कीजिए। 10

(ख) "शेखर : एक जीवनी' का एक भी पात्र नहीं है जो न्यूनाधिक मात्रा में एक संश्लिष्ट चरित्र (composite character) नहीं है"—इस कथन के आधार पर शेखर का मूल्यांकन कीजिए। 10

5. (क) "कवितावली' के 'उत्तरकांड' की भावभूमि के केंद्र में अनन्यता की प्रवृत्ति है"—तर्कपूर्वक स्थापित कीजिए। 10

(ख) 'अँधेरे में' कविता में काव्य-नायक के व्यक्तित्वांतरण की प्रक्रिया में तिलक और गांधी-संबंधी फ़ेंटेसी की भूमिका पर विचार कीजिए। 10

6 (क) "यह नगर दूर से बड़ा सुंदर दिखलाई पड़ता है"—'अंधेर नगरी' के इस कथन में निहित व्यंग्य की व्याप्ति का उद्घाटन कीजिए। 10

(ख) 'कालिदास सच-सच बतलाना' में व्यक्त रचना-प्रक्रिया के स्वरूप का विवेचन कीजिए। 10

7 (क) 'ईदगाह' में सभ्यता-विमर्श किस प्रकार अभिव्यक्त हुआ है? 10

(ख) 'राम की शक्ति-पूजा' में हनुमान द्वारा व्योम को ग्रसने के लिए तत्पर होने का प्रसंग किस उद्देश्य से रखा गया है? 10

8 (क) ‘रामचरितमानस’ के ‘अयोध्याकाण्ड’ में चित्रित भ्रातृत्व-प्रेम की विशेषताओं का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 10

(ख) ‘गोदान’ में आए व्यवस्था के उन रूपों की चर्चा कीजिए जो होरी के शोषण के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ज़िम्मेदार हैं। 10

****